GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

ISSN: 2231-5063
IMPACT FACTOR : 4.6052 (UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 12 | JUNE – 2021

बिलासपुर ज़िले में नगरीकरण का ग्रामीण सामाजिक संरचना पर ग्रामीण-शहरी संबंध, जीवनशैली और पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव

सुश्री आरती तिवारी
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र (प्रभारी प्राचार्य)
एस. बी. टी. महाविद्यालय, जिला बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश:

नगरीकरण ग्रामीण भारत में सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त प्रेरक तत्व बनकर उभरा है, जिसका प्रभाव नगरों की सीमाओं से आगे बढ़कर आसपास के गाँवों तक फैल गया है। यह शोध-पत्र छत्तीसगढ़ के बिलासपुर ज़िले की ग्रामीण सामाजिक संरचना पर नगरीकरण के प्रभाव का अध्ययन करता है, जिसमें आँकड़ों और प्रवृत्तियों के आधार पर ग्रामीण–शहरी संबंधों में परिवर्तन, जीवन-शैली के स्वरूप तथा पारिवारिक रूपांतरण पर विशेष ध्यान दिया गया है। अध्ययन में यह विश्लेषित किया गया है कि बढ़ती संपर्क-सुविधाएँ, प्रवासन, शहरी बाज़ारों का विस्तार तथा शिक्षा और सेवाओं तक पहुँच ने किस प्रकार पारंपरिक ग्रामीण संस्थाओं और जीवन-पद्धतियों को प्रभावित किया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि आवागमन, आर्थिक निर्भरता और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से ग्रामीण–शहरी अंतःक्रियाएँ तीव्र हुई हैं, जिससे उपभोग, आवास, शिक्षा और व्यवसायिक विकल्पों में उल्लेखनीय परिवर्तन आए हैं। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में क्रमशः कमी आई है और एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है, जिसके साथ लैंगिक भूमिकाओं तथा पीढ़ियों के बीच संबंधों में भी परिवर्तन दिखाई देता है। यद्यपि नगरीकरण ने जीवन-स्तर और सामाजिक गतिशीलता में सुधार किया है, तथापि इससे सामुदायिक एकता और पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण भी कमजोर हुए हैं। शोध-पत्र का निष्कर्ष है कि बिलासपुर ज़िले का ग्रामीण समाज पूर्ण संरचनात्मक रूपांतरण के बजाय एक संक्रमणकालीन अवस्था में है, जहाँ पारंपरिक ग्रामीण मूल्यों और उभरते शहरी प्रभावों का सहअस्तित्व दिखाई देता है।

मुख्य शब्द: नगरीकरण, ग्रामीण सामाजिक संरचना, बिलासपुर ज़िला, ग्रामीण–शहरी संबंध, पारिवारिक रूपांतरण.

प्रस्तावना:

नगरीकरण समकालीन भारतीय समाज को प्रभावित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं में से एक है। यद्यपि इसे प्रायः नगरों के विकास से जोड़ा जाता है, किंतु इसका प्रभाव शहरी सीमाओं से कहीं आगे तक विस्तृत होकर ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। शहरी केंद्रों का विस्तार, परिवहन और संचार नेटवर्क का सुदृढ़ीकरण,

औद्योगिक विकास तथा ग्रामीण-से-शहरी प्रवासन में वृद्धि, इन सभी कारकों ने मिलकर देश-भर में ग्रामीण सामाजिक संरचनाओं में गहन परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

छत्तीसगढ़ का बिलासपुर ज़िला इस ग्रामीण–शहरी अंतःक्रिया का एक प्रमुख उदाहरण प्रस्तुत करता है। एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक, वाणिज्यिक और शैक्षिक केंद्र के रूप में बिलासपुर नगर में निरंतर शहरी वृद्धि हुई है, जिसका प्रभाव आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों पर स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। नगर के समीप स्थित गाँव शहरी बाज़ारों, संस्थानों और रोज़गार अवसरों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। इस बढ़ती अंतःक्रिया ने पारंपरिक ग्रामीण जीवन को रूपांतरित किया है तथा व्यवसाय, उपभोग, सामाजिक संबंधों और पारिवारिक संगठन की संरचना को नए रूप दिए हैं।

परंपरागत रूप से बिलासपुर के ग्रामीण समाज की विशेषताएँ कृषि-आधारित आजीविका, संयुक्त परिवार व्यवस्था, सुदृढ़ कुटुंबीय संबंध, जाति-आधारित सामाजिक संगठन और समुदाय-केंद्रित मूल्य रही हैं। किंतु नगरीकरण ने नई आकांक्षाएँ, जीवन-शैली और सामाजिक मानदंड प्रस्तुत किए हैं। शिक्षा, गैर-कृषि रोज़गार, जनसंचार माध्यमों और प्रौद्योगिकी तक बढ़ी पहुँच ने कार्य, परिवार, लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक गतिशीलता के प्रति ग्रामीण दृष्टिकोण को परिवर्तित किया है। इन परिवर्तनों ने पारंपरिक सामाजिक संस्थाओं को क्रमशः कमजोर किया है, साथ ही सामाजिक अंतःक्रिया और पहचान के नए रूप भी निर्मित किए हैं।

यह शोध-पत्र बिलासपुर ज़िले की ग्रामीण सामाजिक संरचना पर नगरीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करता है, जिसमें विशेष रूप से ग्रामीण–शहरी संबंधों, जीवन-शैली में आए परिवर्तनों तथा पारिवारिक रूपांतरण पर बल दिया गया है। इन आयामों के अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि शहरी प्रभाव ने ग्रामीण समाज को किस प्रकार पुनर्परिभाषित किया है और क्या ये परिवर्तन निरंतरता, रूपांतरण अथवा एक संकर सामाजिक संरचना का संकेत देते हैं। अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन की व्यापक प्रक्रिया को समझने तथा संतुलित और समावेशी ग्रामीण विकास नीतियों के निर्माण हेतु यह अध्ययन विशेष महत्व रखता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

१) बिलासपुर ज़िले में नगरीकरण की प्रकृति और उसके विस्तार का अध्ययन करना।
२) ग्रामीण–शहरी संबंधों और अंतःक्रियाओं में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
३) नगरीकरण के प्रभाव से ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन-शैली में हुए परिवर्तनों का अध्ययन करना।
४) ग्रामीण परिवार संरचना में हुए रूपांतरणों का परीक्षण करना।
५) ग्रामीण समाज पर शहरी प्रभावों के सामाजिक–सांस्कृतिक निहितार्थों का मूल्यांकन करना।

अनुसन्धान पद्धति:

यह अध्ययन बिलासपुर ज़िले की ग्रामीण सामाजिक संरचना पर नगरीकरण के प्रभाव का परीक्षण करने हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-अभिकल्प को अपनाता है। शोध मुख्यतः जनगणना प्रतिवेदन, ज़िला सांख्यिकी पुस्तिकाएँ, सरकारी प्रकाशन तथा समाजशास्त्रीय अध्ययनों से प्राप्त द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। शहरी विस्तार से प्रभावित ग्रामीण क्षेत्रों का उद्देश्यपूर्ण चयन किया गया है। उपलब्ध आँकड़ों का विश्लेषण तुलनात्मक एवं प्रवृत्ति-विश्लेषण विधियों द्वारा किया गया है।

बिलासपुर ज़िले में नगरीकरण का ग्रामीण सामाजिक संरचना पर ग्रामीण-शहरी संबंध, जीवनशैली और पारिवारिक परिवर्तन का प्रभाव :

छत्तीसगढ़ में प्रशासनिक, वाणिज्यिक और शैक्षिक केंद्र के रूप में बढ़ते महत्व के कारण बिलासपुर ज़िले में नगरीकरण का तीव्र विस्तार हुआ है। परिवहन नेटवर्क का विकास, औद्योगिक इकाइयों की स्थापना, सेवा क्षेत्र में रोज़गार के अवसर तथा शहरी अवसंरचना के विस्तार ने नगर

के प्रभाव को आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों तक फैला दिया है। बिलासपुर नगर के निकट स्थित गाँव शहरी बाज़ारों, संस्थानों और सांस्कृतिक व्यवहारों से अधिकाधिक जुड़े हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीण और शहरी जीवन के बीच की पारंपरिक सीमा क्रमशः कमजोर हुई है और एक संक्रमणकालीन ग्रामीण–शहरी सामाजिक परिवेश का निर्माण हुआ है।

नगरीकरण की प्रक्रिया ने ज़िले में ग्रामीण–शहरी संबंधों को सुदृढ़ किया है। ग्रामीण परिवार अब रोज़गार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और उपभोक्ता वस्तुओं के लिए शहरी केंद्रों पर अधिक निर्भर हो गए हैं। ग्रामीण युवाओं का शिक्षा एवं रोज़गार के लिए बिलासपुर नगर की ओर मौसमी और स्थायी प्रवासन सामान्य हो गया है, जिससे गाँवों और नगर के बीच लोगों और संसाधनों का निरंतर आवागमन बढ़ा है। कार्य और शिक्षा के लिए दैनिक आवागमन ने ग्रामीण अलगाव को कम किया है तथा आर्थिक परस्परनिर्भरता को बढ़ाया है, यद्यपि इससे ग्रामीण आजीविकाएँ शहरी आर्थिक परिस्थितियों पर अधिक निर्भर भी हो गई हैं।

शहरी प्रभाव के परिणामस्वरूप ग्रामीण जीवन-शैली में उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलते हैं। स्थानीय संसाधनों पर आधारित पारंपरिक उपभोग पद्धतियाँ अब बाज़ारोन्मुख व्यवहारों में परिवर्तित हो रही हैं। मोबाइल फोन, टेलीविजन और डिजिटल माध्यमों के व्यापक उपयोग ने ग्रामीण जनसंख्या को शहरी संस्कृति और मूल्यों से परिचित कराया है। शैक्षिक आकांक्षाओं में वृद्धि हुई है, जहाँ शहरी विद्यालयों और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को अधिक प्राथमिकता दी जा रही है। आवासीय स्वरूप में भी परिवर्तन आया है; अनेक परिवार पारंपरिक घरों के स्थान पर पक्के मकानों का निर्माण कर रहे हैं, जो बदलती आकांक्षाओं और आर्थिक स्थिति में सुधार को दर्शाता है।

ग्रामीण बिलासपुर में व्यावसायिक संरचना में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। कृषि, जो कभी प्रमुख आजीविका थी, अब अनेक परिवारों के लिए एकमात्र आय-स्रोत नहीं रही है। बड़ी संख्या में लोग मज़दूरी, छोटे व्यवसाय, परिवहन सेवाओं और शहरी अनौपचारिक क्षेत्र में कार्य करने लगे हैं। यद्यपि इस विविधीकरण से आय के अवसर बढ़े हैं, फिर भी इससे सामूहिक कृषि प्रथाएँ और पारंपरिक ग्रामीण सहयोग की व्यवस्थाएँ कमजोर हुई हैं।

नगरीकरण का प्रभाव ग्रामीण परिवार संरचना और कुटुंबीय संबंधों पर भी गहरा पड़ा है। पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था प्रवासन, रोज़गार गतिशीलता और आवासीय परिवर्तनों के कारण धीरे-धीरे एकल परिवारों में परिवर्तित हो रही है। परिवार के भीतर निर्णय-निर्माण की शक्ति अब युवा पीढ़ी की ओर अधिक स्थानांतरित हो रही है, वहीं शिक्षा और आय-सृजन गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी भी बढ़ी है। इन परिवर्तनों के बावजूद भावनात्मक संबंध और कुटुंबीय दायित्व ग्रामीण सामाजिक जीवन में अब भी महत्त्वपूर्ण बने हुए हैं।

पारंपरिक सामाजिक संस्थाएँ और मूल्य भी नगरीकरण से प्रभावित हुए हैं। यद्यपि जाति व्यवस्था अब भी अस्तित्व में है, परंतु शिक्षा, व्यावसायिक गतिशीलता और शहरी संपर्क के कारण उसकी कठोरता में कमी आई है। सामुदायिक श्रम, अनौपचारिक सहयोग प्रणालियाँ और पारंपरिक उत्सव जैसी सामूहिक गतिविधियों में गिरावट आई है, जबकि व्यक्ति-केंद्रित जीवन-शैली अधिक प्रचलित हो गई है। विवाह प्रथाओं में भी परिवर्तन दिखाई देता है, जैसे विवाह में विलंब और जीवनसाथी चयन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जो शहरी आदर्शों से प्रभावित है।

समग्र रूप से देखा जाए तो नगरीकरण ने बिलासपुर ज़िले की ग्रामीण सामाजिक संरचना पर सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के प्रभाव डाले हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, सूचना और रोज़गार तक बेहतर पहुँच ने सामाजिक गतिशीलता और जीवन-स्तर को ऊँचा उठाया है। साथ ही पारंपरिक मूल्यों, सामुदायिक एकता और पीढ़ियों के बीच प्राधिकार के कमजोर होने से नई सामाजिक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। इस प्रकार, बिलासपुर का ग्रामीण समाज एक संक्रमणकालीन अवस्था में है, जहाँ पारंपरिक ग्रामीण स्वरूप पूर्णतः समाप्त होने के बजाय उभरते शहरी प्रभावों के साथ सहअस्तित्व में बना हुआ है।

ग्रामीण जीवन-शैली में परिवर्तन:

शहरी प्रभाव ने बिलासपुर ज़िले की ग्रामीण जीवन-शैली में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। स्थानीय रूप से उत्पादित वस्तुओं पर आधारित पारंपरिक उपभोग पद्धतियाँ धीरे-धीरे बाज़ारोन्मुख व्यवहारों में परिवर्तित हो गई हैं। स्मार्टफ़ोन, टेलीविजन और पैक्ड खाद्य पदार्थों जैसे उपभोक्ता वस्तुओं का उपयोग बढ़ा है, जिससे ग्रामीण परिवार शहरी संस्कृति और सूचनाओं के संपर्क में आए हैं। शैक्षणिक आकांक्षाओं में भी परिवर्तन हुआ है; बेहतर रोज़गार संभावनाओं के लिए अनेक ग्रामीण परिवार अंग्रेज़ी माध्यम के विद्यालयों और शहरी उच्च शिक्षण संस्थानों को

प्राथमिकता देने लगे हैं। आवासीय स्वरूप में यह परिवर्तन स्पष्ट है, जहाँ पारंपरिक कच्चे मकानों के स्थान पर पक्के निर्माण बढ़ रहे हैं। वस्त्र और खान-पान की आदतों में भी शहरी शैलियों और आहार प्राथमिकताओं को अपनाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। ये सभी परिवर्तन पारंपरिक सादगी से आधुनिक, उपभोक्ता-उन्मुख जीवन-शैली की ओर क्रमिक संक्रमण का संकेत देते हैं।

ग्रामीण बिलासपुर में नगरीकरण का सबसे स्पष्ट प्रभाव परिवार व्यवस्था के रूपांतरण में दिखाई देता है। शिक्षा और रोज़गार हेतु प्रवासन के कारण परिवार के सदस्य विभिन्न स्थानों पर रहने लगे हैं, जिससे पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था कमजोर हुई है। परिणामस्वरूप, विशेषकर शहरी या अर्ध-शहरी व्यवसायों से जुड़े परिवारों में एकल परिवार अधिक सामान्य होते जा रहे हैं। इस परिवर्तन ने परिवार के संगठन, आवासीय व्यवस्थाओं और घरेलू अधिकार-संतुलन को प्रभावित किया है।

नगरीकरण ने ग्रामीण परिवारों में लैंगिक भूमिकाओं में भी परिवर्तन को प्रोत्साहित किया है। शिक्षा और रोज़गार के बढ़ते अवसरों ने महिलाओं की गैर-कृषि और आय-सृजन गतिविधियों में भागीदारी को बढ़ाया है। महिलाएँ अब घरेलू निर्णय-निर्माण, बच्चों की शिक्षा और वित्तीय मामलों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं। यद्यपि पारंपरिक लैंगिक मानदंड अभी भी विद्यमान हैं, फिर भी परिवार संरचना में अधिक संतुलित भूमिकाओं की दिशा में क्रमिक परिवर्तन स्पष्ट है।

पीढ़ीगत संबंध भी शहरी प्रभाव से प्रभावित हुए हैं। शहरी मूल्यों और शिक्षा के संपर्क में आने से युवाओं में व्यक्तिगत और व्यावसायिक निर्णयों में अधिक स्वतंत्रता की प्रवृत्ति बढ़ी है, जिससे बुज़ुर्गों का पारंपरिक प्राधिकार कुछ हद तक कम हुआ है। शिक्षा, व्यवसाय और विवाह से जुड़े पारिवारिक निर्णयों में युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। इसके बावजूद , भावनात्मक संबंध, कुटुंबीय दायित्व और पारिवारिक बंधनों के प्रति सम्मान ग्रामीण सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण तत्व बने हुए हैं।

नगरीकरण ने ग्रामीण सामाजिक संस्थाओं को भी कई प्रकार से प्रभावित किया है। जाति व्यवस्था यद्यपि अभी भी विद्यमान है, परंतु शिक्षा, व्यावसायिक गतिशीलता और शहरी संपर्क के कारण उसकी कठोरता में कमी आई है। सामुदायिक जीवन कमजोर हुआ है , क्योंकि परस्पर श्रम-विनिमय और पारंपरिक उत्सव जैसी सामूहिक प्रथाओं में गिरावट आई है और व्यक्ति-केंद्रित सामाजिक व्यवहार अधिक प्रचलित हुए हैं। विवाह प्रथाओं में भी परिवर्तन दिखाई देता है, जिसमें प्रेम विवाहों में वृद्धि, विवाह में विलंब तथा शहरी मानदंडों और जीवन-शैलियों से प्रभावित प्राथमिकताएँ शामिल है। ये परिवर्तन पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण से व्यक्तिगत चयन और पसंद की ओर क्रमिक संक्रमण को दर्शाते हैं।
समग्र रूप से, नगरीकरण ने बिलासपुर ज़िले के ग्रामीण समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक, दोनों प्रकार के प्रभाव डाले हैं। सकारात्मक पक्ष में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार और सूचना तक बेहतर पहुँच से आय-विविधीकरण और सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है। वहीं नकारात्मक प्रभावों में पारंपरिक मूल्यों का क्षरण, सामुदायिक एकता का कमजोर होना, छोटे किसानों का हाशियाकरण और सांस्कृतिक पहचान से जुड़ी चुनौतियाँ सम्मिलित हैं। ये परस्पर विरोधी प्रभाव नगरीकरण के अंतर्गत ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन की जटिल और संक्रमणकालीन प्रकृति को रेखांकित करते हैं।

निष्कर्ष:

नगरीकरण ने बिलासपुर ज़िले की ग्रामीण सामाजिक संरचना को ग्रामीण–शहरी संबंधों को सुदृढ़ करते हुए तथा जीवन-शैली, परिवार प्रणालियों और सामाजिक संस्थाओं को पुनःआकार देते हुए उल्लेखनीय रूप से रूपांतरित किया है। बढ़ते प्रवासन, दैनिक आवागमन और बाज़ार एकीकरण ने ग्रामीण अलगाव को कम किया है और गाँवों को शहरी केंद्रों से अधिक निकटता से जोड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप उपभोग पद्धतियों, आवास, शिक्षा और व्यावसायिक विकल्पों में परिवर्तन हुए हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था क्रमशः कमजोर हुई है , जिससे एकल परिवारों का उदय, लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन और पीढ़ीगत संबंधों का पुनर्गठन हुआ है ; साथ ही शिक्षा और गतिशीलता के प्रभाव से जाति और सामुदायिक संस्थाओं की कठोरता में कमी आई है। यद्यपि नगरीकरण ने शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार और सामाजिक गतिशीलता तक पहुँच में सुधार किया है, परंतु इससे पारंपरिक मूल्यों का क्षरण, सामुदायिक एकता का कमजोर होना और छोटे किसानों के समक्ष चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। कुल मिलाकर, बिलासपुर ज़िले का ग्रामीण समाज एक संक्रमणकालीन अवस्था से गुजर रहा है , जहाँ पारंपरिक ग्रामीण तत्व उभरते शहरी प्रभावों के साथ सहअस्तित्व में बने हुए हैं, जो संतुलित और समावेशी विकास दृष्टिकोण की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

संदर्भ:

1. *Bose, A. (2001). India's urbanization: Challenges and opportunities. Population Reference Bureau. https://www.prb.org/resources/indias-urbanization-challenges-and-opportunities/*
2. *Census of India. (2011). Primary census abstract: Chhattisgarh. Office of the Registrar General & Census Commissioner, India. https://censusindia.gov.in*
3. *Desai, S., Dubey, A., Joshi, B. L., Sen, M., Shariff, A., & Vanneman, R. (2010). Human development in India: Challenges for a society in transition. Oxford University Press.*
4. *Guria, N. N. (2018). Social effects of poor sanitation and waste management on Bilaspur city. International Journal of Geography and Geology, 7(2), 45–52.*
5. *Kundu, A. (2006). Trends and patterns of urbanization and their economic implications. India Infrastructure Report, 27–44.*
6. *Rao, M. S. A. (2006). Social change in urban India. Orient BlackSwan.*
7. *Sharma, K. L. (2013). Indian social structure and change. Rawat Publications.*
8. *UNESCO. (1972). The social implications of industrialization and urbanization. UNESCO Press. https://unesdoc.unesco.org*
9. *United Nations Convention to Combat Desertification. (2009). State of environment report: India 2009. UNCCD. https://www.unccd.int/resources/state-environment-report-india-2009*
10. *Vaidyanathan, A. (2010). Urbanization and rural–urban linkages in India. Indian Journal of Human Development, 4(2), 287–311. https://journals.sagepub.com*